CHAPTER 10, सूरदास

PAGE 129, अभ्यास

11:11:1: प्रश्न-अभ्यास:1

1. 'खेलन में को काको गुसैयाँ' पद में कृष्ण और सुदामा के बीच किस बात पर तकरार हुई?

उत्तर- इस पद में कृष्ण और सुदामा की बीच हार और जीत को लेकर विवाद है। सुदामा खेल जीत जाते है और कृष्ण अपनी हार पर क्रोधित होकर बैठ जाते हैं। कृष्ण के क्रोधित होने के कारण सुदामा और अन्य साथी नाराज हो जाते हैं।

11:11:1: प्रश्न-अभ्यास:2

2. खेल में रूठने वाले साथी के साथ सब क्यों नहीं खेलना चाहते?

उत्तर- खेल में भागते साथी से हर कोई परेशान हो जाता है। खेल में सभी भागिदार बराबर होते हैं। हारने वाले को दुसरे को बारी देना होता है। जो भागिदार अपनी बारी के बाद गुस्सा हो जाता है तथा दुसरे भागिदार को उसकी बारी नहीं देता है उसे कोई अन्य भागिदार पसंद नहीं करते है। हर कोई खेलना चाहता है और हर कोई गुस्सा करने वाले लोगों से दूर रहता है।

11:11:1: प्रश्न-अभ्यास:3

3. **खेल में कृष्ण के रूठने पर उनके साथियों ने उन्हें डाँटते हुए क्या-क्या तर्क दिए?**

उत्तर- जब कृष्ण खेल में गुस्से में थे, तो उनके सहयोगियों ने उन्हें डांटा और ये तर्क दिए: -

(क) आप अपनी हार के कारण गुस्सा हो रहे है जो कि गलत बात है।

(ख) हम सभी की जाती सामान है। खेल में सभी
एक बराबर होते है।

(ग) आपका का गुस्सा हम नहीं सह सकते है
क्योंकी आप हमारे माता पिता नहीं है।

(घ) आप के साथ कोई भी खेलना पसंद नहीं करेगा
यदि आप ऐसे ही गुस्सा करते रहेंगे।

11:11:1: प्रश्न-अभ्यास:4

4. कृष्ण ने नंद बाबा की दुहाई देकर दाँव क्यों दिया?

उत्तर- कृष्ण ने अपने पिता नन्द बाबा को आश्वासन देते है कि खेल में वे सभी को उसकी बारी देंगे तथा खेल में वे सबको हराएंगे। उन्होंने अपने पिता नन्द की दुहाई इस लिए दी क्योंकी सभी लोग उनके पे भरोसा करने लगेंगे।

11:11:1: प्रश्न-अभ्यास:5

5. इस पद से बाल-मनोविज्ञान पर क्या प्रकाश पड़ता है?

उत्तर- इन पदों से बाल मनोविज्ञान का बहुत अच्छे से बताया गया है। इन पदों में बताया गया है की बच्चे समझदार होते है तथा उन्हें सही गलत का गया होता हैव् उन्हें ये भी पता होता है की कौन छोटा है और कौन बड़ा। उन्हें इस बात का ज्ञान है की खेल में सबही बराबर होते है अतः कृष्ण अपने पिता के नाम पर मनमानी नहीं कर सकते है। वे निर्णय लेने में भी निपुण होते है। वे कृष्ण को चेतावनी देते हुए कहते है कि यदि कृष्ण ने ये बेईमानी करना बंद नहीं किया तो कोई भी साथी उनके साथ खेलना पसंद नहीं करेगा।

11:11:1: प्रश्न-अभ्यास:6

6. 'गिरिधर नार नवावति? से सखी का क्या आशय है?

उत्तर- गोपियों ने प्रस्तुत पंक्ति में कृष्ण पर व्यंग्य किया है। इन पंक्तियों का तात्पर्य यह है कि कृष्ण साधारण बांसुरी को बजाते हुए अपनी गर्दन झुका देते है क्यौंकी वे प्रेम से वशीभूत हो जाते है। गोपियों को बांसुरी अपनी सौत की तरह लगती है। वे बांसुरी को एक औरत समझकर गुस्सा करती है तथा कृष्ण के उपर व्यंग करते हुए कहती है कि कृष्ण बांसुरी को अपने ओठों से नहीं लगाये क्यौंकी गोपियों को यह अच्छा नहीं लगता है।

11:11:1: प्रश्न-अभ्यास:7

7. कृष्ण के अधरों की तुलना सेज से क्यों की गई है?

उत्तर- कृष्ण की अधरों की तुलना सेज से करने के निम्नलिखित कारण है -

(क) कृष्ण के अधर तथा सेज की कोमलता एक समान है।

(ख) सेज मनुष्य के सोने के काम आती है उसी प्रकार कृष्ण के अधर उनकी बांसुरी के सोने के काम आती है।

11:11:1: प्रश्न-अभ्यास:8

8. पठित पदों के आधार पर सूरदास के काव्य की विशेषताएँ बताइए।

उत्तर- सूरदास के काव्य की विशेषताएँ इस प्रकार हैं: -

(क) सूरदास के पदों में सर्व्श्रेस्थ वात्सल्य रस है।

(ख) सूरदास के पदों में बाल लीलायों का बहोत ही सुन्दर चित्रण है।

(ग) सूरदास के पदों में बाल मनोविज्ञान को अच्छे से समझाया गया है तथा बालकों के स्वाभाव को बहोत ही अच्छे से दर्शाया गया है।

(घ) सूरदास के पदों में स्त्रियों की मनोदशा का सजीव चित्रण है।

(ङ) सूरदास जी ने अपने पदों में श्रृंगार रस का अच्छे से प्रयोग है।

(च) सूरदास के पदों में उत्प्रेक्षा, उपमा तथा अनुप्रास अलंकार का प्रयोग निपुणता से हुआ है।

(छ) सूरदास के पद ब्रजभाषा में लिखे गए है तथा उनमे गेयता का गुण विद्यमान है।

9. निम्नलिखित पद्यांशों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए-
(क) जाति-पाँति .... तुम्हारे गैयाँ।
(ख) सुनि री .... नवावति।

उत्तर

(क) प्रसंग- प्रस्तुत पंक्ति सूरदास द्वारा लिखित ग्रंथ सूरसागर से ली गई हैं। इस पंक्ति में कृष्ण द्वारा बारी न दिए जाने पर ग्वाले कृष्ण को नाना प्रकार से समझाते हुए अपनी बारी देने के लिए विवश करते हैं।

व्याख्या- 'कृष्ण' गोपियों से हारने पर नाराज़ होकर बैठ जाते हैं। उनके मित्र उन्हें उदाहरण देकर समझाते हैं। वे कहते हैं कि तुम जाति-पाति में हमसे बड़े नहीं हो, तुम हमारा पालन-पोषण भी नहीं करते हो। अर्थात तुम हमारे समान ही हो। इसके अतिरिक्त यदि तुम्हारे पास हमसे अधिक गाएँ हैं और तुम इस अधिकार से हम पर अपनी चला रहे हो, तो यह उचित नहीं कहा जाएगा। अर्थात खेल में सभी समान होते हैं। जाति, धन आदि के कारण किसी को खेल में विशेष अधिकार नहीं मिलता है। खेलभावना को इन सब बातों से अलग रखकर खेलना चाहिए।

(ख) प्रसंग- प्रस्तुत पंक्ति सूरदास द्वारा लिखित ग्रंथ सूरसागर से ली गई हैं। इस पंक्ति में गोपियों की जलन का पता चलता है। वह कृष्ण द्वारा बजाई जाने वाली बाँसुरी से सौत की सी डाह रखती हैं।

व्याख्या- एक गोपी अन्य गोपी से कहती है कि हे सखी! सुन यह बाँसुरी कृष्ण को विभिन्न प्रकार से परेशान करती है। कृष्ण को एक पैर पर खड़ा करके अपना अधिकार व्यक्त करती है। कृष्ण तो बहुत ही कोमल हैं। वह उन्हें इस प्रकार अपनी आज्ञा का पालन करवाती है कि कृष्ण की कमर भी टेढ़ी हो जाती है। यह बाँसुरी ऐसे कृष्ण को अपना कृतज्ञ बना देती है, जो

स्वयं चतुर हैं। इसने गोर्वधन पर्वत उठाने वाले कृष्ण तक को अपने सम्मुख झुक जाने पर विवश कर दिया है। भाव यह है कि गोपियाँ कृष्ण की बाँसुरी से जलती हैं। अतः बाँसुरी बजाते वक्त कृष्ण की प्रत्येक शारीरिक मुद्रा पर गोपियाँ कटाक्ष करती हैं। बाँसुरी बचाते समय कृष्ण एक पैर पर खड़े होते हैं। जब बाँसुरी बजाते हैं, तो थोड़े टेढ़े खड़े होते हैं, जिससे उनकी कमर भी टेढ़ी हो जाती है। उसे बजाते समय वे आगे की ओर थोड़े से झुक जाते हैं। ये सारी मुद्राओं को देखकर गोपियों को ऐसा लगता है कि कृष्ण हमारी कुछ नहीं सुनते हैं। जब बाँसुरी बजाने की बारी आती है, तो कृष्ण इसके कारण हमें भूल जाते हैं।